# अपूर्ण अभिलेखों से खाते

**11**

अब तक हमने व्यावसायिक फर्मों के लेखांकन प्रलेखों का अध्ययन किया है जो कि पुस्त-पालन की द्विप्रविष्टि प्रणाली को अपनाते हैं। इससे हमें यह अनुभव होता है कि सभी व्यावसायिक इकाइयाँ इस प्रणाली को अपनाती हैं। हालाँकि व्यवहार में, सभी फर्म लेखांकन अभिलेखों को द्विप्रविष्टि प्रणाली के अनुसार नहीं रखती हैं। बहुत से छोटे-छोटे उद्यम अपने लेन-देनों के अभिलेखों को आंशिक रूप से ही रखते हैं। लेकिन वर्ष के अंत में फर्म के लिए लाभ अथवा हानि को ज्ञात करना तथा वित्तीय स्थिति को आंकना आवश्यक है। यह अध्याय अपूर्ण प्रलेखों से फर्म की वित्तीय स्थिति और लाभ-हानि के निर्धारण से संबंधित है।

**अध्ययन की सामग्री**

इस अध्याय के अध्ययन के उपरांत आप:

- अपूर्ण अभिलेखों का अर्थ एवं विषेशताएं बता सकेंगे;
- अवस्था विवरण द्वारा लाभ-हानि की गणना कर सकेंगे;
- अवस्था विवरण व तुलन-पत्र में अन्तर कर सकेंगे;
- अपूर्ण खातों से व्यापारिक लाभ-हानि खाता और तुलन-पत्र तैयार कर सकेंगे;
- संबधित खातों को बनाकर अनुपलब्ध डाटा तथ्यों सूचनाओं को ज्ञात कर सकेंगे।

## 11.1 अपूर्ण अभिलेखों का अर्थ

लेखांकन अभिलेख जो कि द्विप्रविष्टि प्रणाली के अनुसार नहीं बनाए जाते अपूर्ण अभिलेख कहलाते हैं। यद्यपि कुछ लोग इसे एकल प्रविष्टि प्रणाली भी कहते हैं। हालाँकि एकल प्रविष्टि प्रणाली एक मिथ्या प्रणाली है क्योंकि इस प्रकार लेखांकन अभिलेख तैयार करने की कोई प्रणाली नहीं होती है, तथा द्विप्रविष्टि प्रणाली की यह कोई वैकल्पिक अथवा संक्षिप्त विधि भी नहीं है। यह अभिलेखों के रख-रखाव की एक ऐसी कार्यविधि है जिसके अन्तर्गत कुछ लेन-देनों का अभिलेखन उपयुक्त *नाम* एवं *जमा* मदों से किया जाता है, जबकि कुछ अन्य लेन-देनों के अभिलेखन के लिये एक अथवा कोई भी प्रविष्टि नहीं की जाती है। समान्यत: इस प्रणाली के अन्तर्गत रोकड़ और देनदारों एवं लेनदारों के व्यक्तिगत खातों का अभिलेख तैयार किया जाता है। परिसंपत्तियों, देयताओं, व्ययों और आगमों से संबंधित अन्य सूचनाओं को आंशिक रूप से अभिलेखित किया जाता है। अत: इन्हें सामान्य तौर पर अपूर्ण अभिलेख कहते हैं।

© PSSEBC WEB COPY . NOT TO BE PUBLISHED

### *11.1.1 अपूर्ण अभिलेखों की विशेषताएं*

लेन-देनों को आशिक रूप से अभिलेखित करने के कारण लेख अपूर्ण होते हैं जैसे कि छोटे दुकानदार या ठेलेवाले और सड़क पर माल विक्रय करने वाले आदि, इस प्रकार के उदाहरण में आते हैं। बड़े पैमाने के संगठनों के संदर्भ में लेखांकन अभिलेखों की अपूर्णता की स्थिति विभिन्न कारणों से उत्पन्न होती है, जैसे प्राकृतिक आपदा, अगजनी, चोरी, आदि। अपूर्ण लेखों कि विशेषताएं निम्न हैं:

(क) यह सौदों को अभिलेखित करने की विधिवत प्रक्रिया नहीं है।

(ख) सामान्यतया नकद लेन-देनों और व्यक्तिगत खाते विधिवत रखे जाते हैं, और आगम और अधि लाभों, व्ययों और हानियों, परिसम्पतियों एवं दायित्व से संबंधित सूचनाएँ नहीं रखी जाती हैं।

(ग) रोकड़ पुस्तक में स्वामी के व्यक्तिगत लेन-देनों को दर्शाया जा सकता है।

(घ) विभिन्न सस्थाएं अपनी सुविधा व अवश्यकताओं के अनुसार अभिलेखों को रखती हैं और एकरूपता का आभाव होने के कारण ऐसे लेखे तुलनीय नहीं होते हैं।

(ड.) लाभ अथवा हानि की गणना अथवा किसी अन्य सूचना को प्राप्त करने के लिये आवश्यक आंकड़े केवल मौलिक प्रमाणकों से ही उपलब्ध किये जा सकते हैं, जैसे विक्रय बीजक, क्रय बीजक आदि। अत: मौलिक प्रमाणकों पर निर्भरता अपरिहार्य है।

(च) इस प्रणाली के अंन्तर्गत लाभ अथवा हानि की गणना उच्चस्तरीय शुद्धता से नहीं हो पाती है। क्योंकि उपलब्ध लेखों से लाभ अथवा हानि का अनुमान ही लगाया जा सकता है। तुलन-पत्र भी परिसम्पत्तियों एवं देयताओं की पूर्ण एवं सही स्थिति को नहीं दर्शाता है।

## 11.2 अपूर्णता के कारण और सीमायें

व्यवहार में अक्सर यह देखा गया है। कि निम्नलिखित कारणों से व्यापारी अपूर्ण लेखे रखते हैं:

(क) लेखांकन सिद्धांतों के ज्ञान के आभाव में ये यह प्रणाली व्यक्तियों द्वारा अपनाई जाती है।

(ख) यह प्रलेखों के रख रखाव की मितव्ययी विधि है। इसकी लागत कम होती है क्योंकि सस्थाओं द्वारा विशिष्ट लेखापालों की नियुक्ति नहीं की जाती है।

(ग) प्रलेखों के रख-रखाव के लिये कम समय लगता है क्योंकि केवल कुछ पुस्तकें बनाई जाती हैं।

(घ) यह प्रलेखों के रख-रखाव की सरल विधि है क्योंकि व्यपार के स्वामी द्वारा केवल आवश्यक सौदों को अभिलेखन किया जाता है।

लेखांकन प्रलेखों की अपूर्णता की अनेक सीमायें हैं यह विस्तृत रूप से कहा जा सकता है कि जब तक एक सुचारू व्यवस्था द्वारा प्रलेखों का रख-रखाव नहीं किया जाता है तब तक विश्वसनीय वित्तीय विवरण तैयार नहीं किये जा सकते हैं। संक्षिप्त रूप में अपूर्ण लेखों की सीमायें निम्नलिखित हैं:

(क) चूँकि द्वि-प्रविष्टि प्रणाली का पालन नहीं होता है इसलिए गणितीय शुद्धता की जाँच नहीं हो पाती है। ऐसी स्थिति में तलपट तैयार नहीं किया जा सकता है।

© BSTBPC WEB COPY. NOT TO BE PUBLISHED

(ख) व्यावसायिक क्रियाकलापों के वित्तीय परिणामों का मूल्यांकन और सही निर्धारण नहीं हो पाता है।

(ग) व्यवसाय की लाभप्रदता, तरलता और शुद्धीश्मता का विश्लेषण नहीं किया जा सकता है। इस कारण से बाहरी स्त्रोतों से कोषों की व्यवस्था भावी व्यावसायिक क्रियाओं के नियोजन में समस्या उत्पन्न होती है।

(घ) चोरी अथवा आगजनी के कारण स्टॉक में हानि की स्थिति में स्वामियों द्वारा बीमा कम्पनी से दावा करने में कठिनाई आती है।

(ड.) गणना की गई आय की विश्वसनीयता के लिये आयकर अधिकारियों को संन्तुष्ट करना कठिन हो जाता है।

## 11.3 लाभ व हानि का निर्धारण

किसी भी व्यवसाय की असफलता, सफलता और कार्य कुशलता का मूल्यांकन करने के लिए व्यावसायिक क्रियाओं के परिणामों को जानना अत्यावश्यक है इससे वित्तीय विवरणों को तैयार करने की आवश्यकता को बल मिलता है, जिससे निम्नांकित तथ्यों को उद्धृत किया जा सकता है:

(क) एक निश्चित अवधि के दौरान अर्जित लाभ या हानि।

(ख) लेखांकन अवधि में अंतिम तिथि को परिसंपत्तियों एवं देयताओं की राशि को दर्शाना।

अत: इस परिस्थिति में एक लेखांकन वर्ष के लिए लाभ अथवा हानि की गणना कैसे की जाए तथा व्यावसायिक इकाई की वित्तीय स्थिति का निर्धारण उस वर्ष के अंत में कैसे किया जाए, इस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस समस्या को दो प्रकार से सुलझाया जा सकता है:

1. व्यापारिक और लाभ व हानि खाता तथा तुलन-पत्र तैयार कर लेखांकन प्रलेखों को उचित क्रम में रखना।
2. लेखांकन वर्ष के अंत तथा प्रारंभ में अवस्था विवरण तैयार करना।

### *11.3.1 अवस्था विवरण का निर्माण*

इस विधि के अंतर्गत परिसंपत्तियाँ एवं देयताओं का विवरण तत्संबंधित लेखांकन वर्ष के प्रारम्भ एवं अंत में बनाया जाता है ताकि अवधि के अंत में पूँजी में परिवर्तन ज्ञात किया जा सके। इसको अवस्था विवरण कहते हैं क्योंकि यह एक तरफ परिसंपत्तियों को तथा दूसरी और देयताओं को दर्शाता है जैसा की तुलन-पत्र में होता है। दोनों पक्षों के योग के अंतर को पूँजी कहते हैं। (देखिये चित्र 11.1)

यद्यपि अवस्था विवरण तुलन-पत्र के समतुल्य होता है किन्तु यह तुलन-पत्र नहीं है क्योंकि डाटा पूर्ण रूप से खाता शेष पर आधारित नहीं होते हैं। स्थायी परिसंपत्तियों, बकाया व्यय, बैंक शेष आदि मदों की राशि का निर्धारण प्रासंगिक दस्तावेजों और मौलिक गणना के आधार पर की जाती है।

© DSTRC WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED

------ **तिथि को अवस्था विवरण**

| *दायित्व* | *राशि (रु.)* | *परिसम्पत्तियां* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|
| देय विपत्र | | भूमि व भवन | |
| लेनदार | | मशीनरी | |
| बकाया व्यय | | फर्नीचर | |
| पूँजी (शेष राशि)* | | स्टॉक | |
| | | देनदार | |
| | | रोकड़ व बैंक | |
| | | पूँजी (शेष राशि)* | |

*नोट*: *जब दायित्व का जोड़, परिसम्पत्तियों के जोड़ से अधिक होगा, पूँजी का परिसम्पत्तियों में दिखाया जायेगा व यह पूँजी के नाम शेष को प्रदर्शित करेगा

**चित्र 11.1:** *अवस्था विवरण का प्रारूप*

अवस्था विवरण की सहायता से आरंभिक एवं अंतिम पूँजी के निर्धारण के पश्चात वर्ष के दौरान उचित लाभ अथवा हानि की गणना के लिये लाभ-हानि विवरण तैयार किया जाता है। पूँजी में, दो बिन्दुओं का अंतर अर्थात प्रारंभिक एवं अंतिम स्वामित्व पूँजी, यह प्रदर्शित करती है कि अभिवृद्धि या कमी स्वामी द्वारा आहरण के माध्यम से समायेजित की गई है अथवा स्वामी द्वारा लेखांकन वर्ष के दौरान व्यापारिक क्रियाओं के कारण नई पूँजी लगाई गई है।

लाभ व हानि विवरण निम्न प्रकार तैयार किया जाता है।

**समाप्त होने वाले वर्ष के अन्त में लाभ व हानि विवरण**

| | *विवरण* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|
| | वर्ष के अन्त में पूँजी (अवस्था विवरण से वर्ष के अन्त में गणना) | |
| *जोड़ा* | वर्ष के दौरान आहरण | |
| *घटाया* | वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूजी लगाना | |
| | वर्ष के अन्त में समायोजित पूँजी | |
| *घटाया* | वर्ष के आरम्भ में पूँजी | |
| | (अवस्था विवरण से वर्ष के आरम्भ में गणना) | |
| | वर्ष दौरान लाभ अथवा हानि | |

**चित्र 11.2:** *लाभ-हानि विवरण का प्रारूप*

यदि शेष सकारात्मक है तो वर्ष के दौरान अर्जित लाभ को प्रदर्शित करेगा लेकिन नकारात्मक शेष होने पर यह फर्म की हानि को इंगित करेगा। इसे लेखांकन समीकरण के रूप में इस प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं:

लाभ आथवा हानि = अंतिम पूँजी - आरंभिक पूँजी + वर्ष के दौरान आहरण - वर्ष के दौरान लगाई पूँजी

© ESTBPC WEB COPY-NOT TO BE PUBLISHED

उदाहरण के लिये निम्न सूचनायें जो शितू के प्रलेखों से ली गई है:

| | रु. |
|---|---|
| वर्ष के आरम्भ में पूँजी 01 अप्रैल, 2004 | 1,20,000 |
| वर्ष के अंत में पूँजी 31 मार्च, 2005 | 2,00,000 |
| वर्ष के दौरान लाई गई पूँजी | 50,000 |
| वर्ष के दौरान एक स्वामी द्वारा पूँजी का आहरण | 30,000 |

वर्ष के लाभ की गणना निम्न प्रकार की जायेगी:

दी गई अवधि में कमाये गये लाभ अथवा हानि की गणना इस प्रकार की जायेगी:

| | *विवरण* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|
| | 31 मार्च 2005 को पूँजी | 2,00,000 |
| *जोड़ा* | वर्ष के दौरान आहरण | 30,000 |
| | | 2,30,000 |
| *घटाया* | वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूँजी | (50,000) |
| | 31 मार्च 2005 को समायोजित अंतिम पूँजी | 1,80,000 |
| *घटाया* | 01 अप्रैल 2004 वर्ष के आरम्भ में पूँजी | (1,20,000) |
| | वर्ष के दौरान लाभ | 60,000 |

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

*उदाहरण 1*

श्री मेहता ने 01 अप्रैल 2004 को 50,000 रुपये की पूँजी लगाकर तैयार वस्त्र का व्यापार आरम्भ किया तथा अपनी पुस्तकों को द्विप्रविष्टि प्रणाली के अंतर्गत नहीं रखा। वर्ष के दौरान 15,000 रूपये की अतिरिक्त पूँजी व्यापार में निवेश की गई । अपने निजी उपयोग के लिए 10,000 रु. का आहरण किया। 31 मार्च 2005 को उसकी स्थिति निम्न प्रकार है।

कुल लेनदार 90,000 रु.; कुल देनदार 1,25,600 रु.; रहतियां 24,750 रु.; बैंक रोकड़ 24,980 रु. अवस्था विवरण विधि के द्वारा श्री मेहता के व्यापार का वर्ष के दौरान लाभ अथवा हानि की गणना करें

***हल***

**श्री मेहता की पुस्तक**

**31 मार्च 2005 को अवस्था विवरण**

| *दायित्व* | *राशि (रु.)* | *परिसम्पत्तियाँ* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|
| लेनदार | 90,000 | बैंक में रोकड़ | 24,980 |
| पूँजी | 85,330 | देनदार | 1,25,600 |
| (शेष राशि) | | स्टॉक | 24,750 |
| | 1,75,330 | | 1,75,330 |

**31 मार्च 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लाभ अथवा हानि का विवरण**

| | *विवरण* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|
| | 31 मार्च 2005 को पूँजी | 85,330 |
| *जोड़ा* | वर्ष के दौरान आहरण | 10,000 |
| | | 95,330 |
| *घटाया* | वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूँजी का निवेश | (15,000) |
| | 31 मार्च 2005 को वर्ष को अन्त में समायोजित पूँजी | 80,330 |
| *घटाया* | 01 अप्रैल 2004 को वर्ष के आरंभ में पूँजी | (50,000) |
| | वर्ष के दौरान लाभ | 30,330 |

*उदाहरण 2*

श्रीमती वन्दना एक छोटी छपाई प्रेस चलाती है। वह केवल वही अभिलेख तैयार करती है जो व्यवसाय को सुचारू रूप से चलाने के लिए आवश्यक है। 1 अप्रैल 2004 को उनकी परिसंपत्तियों तथा देयताओं संबंधी सूचनाएँ इस प्रकार थीं:

छपाई प्रेस 5,00,000 रु., भवन 2,00,000 रु. स्टॉक 50,000 रु., बैंकस्थ रोकड़ 65,600 रु., हस्तस्थ रोकड़ 7,980 रु., ग्राहकों से देय राशि 20,350 रु., लेनदारों का देय राशि 75,340 रु. बकाया मजदूरी 5,000 रु. व्यक्तिगत व्ययों की पूर्ति हेतु वह प्रतिमाह 8,000 रु. आहरित करती है, लेखा वर्ष के दौरान उनके द्वारा 15,000 रु. के अतिरिक्त पूँजी लगाई। 31 मार्च 2005 को उनकी स्थिति इस प्रकार थी।

प्रैस 5,25,000 रु., भवन 2,00,000 रु., स्टॉक 55,000 रु., बैंकस्थ रोकड़ 40,380 रु., हस्तस्थ रोकड़ 15,340, ग्राहकों से देय राशि 17,210 रु., लेनदारों को देय राशि 65,680 रु.।

© RSTBC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

***हल***

**श्रीमती बंदना की पुस्तकें**

**1 अप्रैल 2004 को व 31 मार्च 2005 को अवस्था विवरण**

| *दायित्व* | *01 अप्रैल 2004* | *31 मार्च 2005* | *संपत्तियाँ* | *1 अप्रैल 2004* | *31 मार्च 2005* |
|---|---|---|---|---|---|
| लेनदार | 75,340 | 65,680 | छापाई प्रेस | 5,00,000 | 5,25,000 |
| बकाया मजदूरी | 5,000 | – | भवन | 2,00,000 | 2,00,000 |
| पूँजी (शेष राशि) | 7,63,590 | 7,87,250 | देनदार | 20,350 | 17,210 |
| | | | स्टॉक | 50,000 | 55,000 |
| | | | बैंक में रोकड़ | 65,600 | 40,320 |
| | | | हस्तस्थ रोकड़ | 7,980 | 15,540 |
| | 8,52,930 | 8,52,930 | | 8,52,930 | 8,52,930 |

**31 मार्च 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये लाभ व हानि का विवरण**

| | *विवरण* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|
| | 31 मार्च 2005 को पूँजी | 7,87,250 |
| *जोड़ा* | वर्ष के दौरान आहरण | 96,000 |
| | | 8,83,250 |
| *घटाया* | वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूँजी | (15,000) |
| | वर्ष के अन्त में समायोजित पूंजी (31 मार्च 2005) | 8,68,250 |
| *घटाया* | 01 अप्रैल 2004 को पूँजी | (7,63,590) |
| | वर्ष के दौरान लाभ | 1,04,660 |

### *11.3.2 अवस्था विवरण एवं तुलन-पत्र में अन्तर*

अवस्था विवरण एवं तुलन-पत्र दोनों किसी एक तिथि को एक व्यावसायिक इकाई की परिसंपत्तियों एवं देयताओं को दर्शाती है। हालांकि दोनों में कुछ आधार भूत अन्तर है। अवस्था विवरण अपूर्ण अभिलेखों की सहायता से तैयार होता है जिनमें अधिकांश परिसंपत्तियों का अभिलेखन अनुमान पर आधारित होता है। जबकि तुलन-पत्र द्वि-अंकन प्रणाली के आधार पर तैयार अभिलेखों से तैयार किया जाता है तथा सभी परिसंपत्तियों की सत्यता की खाता बही से जांच की जा सकती है। इसीलिए तुलन-पत्र अवस्था विवरण की तुलना में अधिक विश्वसनीय है। अवस्था विवरण बनाने का उद्देश्य किसी एक तिथि को पूँजी खाते का शेष जानना है। जबकि तुलन-पत्र एक विशेष तिथि को व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को जानने के लिए बनाया जाता है। एक अवस्था विवरण में परिसंपत्ति अथवा देयता की कोई मद छूट सकती है इसका ज्ञान भी नहीं होगा क्योंकि इसके प्रभाव का पूँजी के शेष में समायोजन हो जाएगा तथा अवस्था विवरण के दोनों ओर के जोड़ो का मिलान हो जाएगा। हालांकि तुलन-पत्र में किसी मद के छूट जाने की सभावना बहुत कम होती है क्योंकि ऐसा होने पर तुलन-पत्र का मिलान नहीं होगा तथा लेखाकार लेखांकन अभिलेखों से छूट गई मद को ढूँढ निकालेगा।

इन अन्तरों को नीचे दी गई सारणी में दर्शाया गया है:

| *अन्तर का आधार* | *अवस्था विवरण* | *तुलन-पत्र* |
|---|---|---|
| विश्वसनीयता | यह कम विश्वसनीय है क्योंकि इसे अपूर्ण प्रलेखों से बनाया जाता है। | यह अधिक विश्वसनीय है क्योंकि इसे द्विअंकन विधि द्वारा तैयार किया जाता है। |
| उद्देश्य | अवस्था विवरण बनाने का उद्देश्य किसी तिथि विशेष को पूँजी शेष का अनुमान लगाना है। | यह किसी तिथि विशेष को इकाई की सत्य वित्तीय स्थिति को दर्शाता है। |
| छूटी गईं मदें | परिसंपत्तियों अथवा देयताओं से संबंधित छूटी गई मदों को ढूंढना जटिल होता है। | परिसंपत्तियों और देयताओं से संबंधित छूटी गई मदों को सरलता से ढूढ़ा जा सकता है। |

**चित्र 11.3:** *अवस्था विवरण और तुलन-पत्र की तुलना*

***स्वयं करें***

अपने क्षेत्र के किसी छोटे दुकानदार को ढूँढें तथा उसके द्वारा लेखांकन अभिलेखों के संबंध में पूछें, यदि वह इन अभिलेखों को द्विअंकन प्रणाली से नहीं रख रहा है तो इसके कारण जानकार सूचिबद्ध करें तथा उससे पूछें कि वह लाभ-हानि की गणना किस प्रकार से करता है।

## 11.4 व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा तुलन-पत्र तैयार करना

व्यापारिक और लाभ व हानि खाता तथा तुलन-पत्र बनाने के लिए व्यय, आय, परिसंपत्तियों एवं देयताओं की पूरी सूचना की आवश्यकता होती है। अधूरे अभिलखों में लेनदार, नकद क्रय, देनदार, नकद विक्रय, अन्य नकद भुगतान एवं नकद प्राप्ति आदि कुछ मदों का विस्तृत ब्योरा सरलता से प्राप्त हो जाता है। लेकिन कुछ मदें ऐसी भी हैं जिनका निर्धारण परोक्ष रूप से द्वि-अंकीय तर्क पर किया जाता है। वे अधिकांश साधारण मदें जो छूट गई हैं अथवा जिन्हें ज्ञात करना है, निम्न हैं:

- आरम्भिक पूँजी
- उधार क्रय
- उधार विक्रय
- देय विपत्र
- प्राप्त प्राप्य विपत्र
- लेनदारों को भुगतान
- देनदारों को भुगतान
- अन्य कोई रोकड़/बैंक संबंधित भेद

आप जानते है कि अरंम्भिक पूँजी को वर्ष के प्रारम्भ अवस्था विवरण तैयार कर ज्ञात किया जा सकता है। आगे हमने समझाया है कि हम कुल देनदार एवं कुल लेनदार, कुल प्राप्य बिल एवं कुल देय बिल खातों एवं रोकड़ बही सारांश की मदद से अनुपलब्ध राशियों का निर्धारण किया जा सकता है।

### *11.4.1 उधार क्रय निर्धारण*

अपूर्ण अभिलेखों में समान्यता उधार क्रय के डाटा नहीं होते हैं। यह भी संभव है कि लेनदारों से संबंधित कुछ अन्य सूचनाएँ भी अनुपलब्ध हैं अत: कुल लेनदार खाता बनाने पर (जिसे चित्र सं. 11.4 में दर्शाया गया है) उधार क्रय या लेनदारों से संबंधित अन्य अनुपलब्ध डाटों का शेष के रूप में निर्धारण किया जाता सकता है।

© BSTBPC WEB COPY .NOT TO BE PUBLISHED

**कुल लेनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | रोकड़ भुगतान<br>बैंक (चैक दिये)<br>देय विपत्र<br>(स्वीकृत विपत्र)<br>प्राप्त बट्टा<br>क्रय वापसी<br>शेष आ/ले | | | | आरम्भिक शेष<br>बैंक (अनादृत रोकड़)<br>देय विपत्र (अनादृत विपत्र)<br>उधार क्रय | | |
| | | | | | | | |

**चित्र 11.4:** *लेनदार खाते का प्रारूप*

उदाहरण के लिये निम्न लेन-देन किसान फूड सप्लाई से संबंधित है:

| | रु. |
|---|---|
| लेनदारों का आरंभिक शेष | 40,000 |
| लेनदारों का अंतिम शेष | 50,000 |
| रोकड़ का भुगतान | 85,000 |
| प्राप्त बट्टा | 2,000 |

कुल लेनदार खाता निम्न प्रकार बनाया जायेगा:

**किशन फूड सप्लाई की पुस्तकें**

**कुल लेनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | रोकड़<br>बट्टा<br>अंतिम शेष | | 85,000<br>2,000<br>50,000 | | आरम्भिक शेष<br>उधार क्रय (शेष राशि) | | 40,000<br>97,000 |
| | | | 1,37,000 | | | | 1,37,000 |

### *11.4.2 उधार विक्रय का निर्धारण*

अपूर्ण अभिलेखों में उधार विक्रय आंकड़े उपलब्ध नहीं होते हैं। देनदारों से संबंधित कुछ अन्य सूचनायें अनुपलब्ध हो सकती हैं। अत: कुल देनदार खाता बनाने पर (जिसे चित्र 11.5 में दर्शाया गया है) उधार विक्रय को अन्य अनुपलब्ध आंकड़ों की शेष के रूप में गणना की जा सकती है।

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

**कुल देनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | शेष आ/ला<br>प्राप्य विपत्र (अनादृत)<br>बैंक (चैक अनादृत)<br>उधार विक्रय<br>(शेष राशि) | | | | रोकड़ (प्राप्त रोकड़)<br>बैक (प्राप्त चैक)<br>बट्टा दिया<br>डूबत ऋण<br>प्राप्य विपत्र (प्राप्त विपत्र)<br>शेष आ/ले | | |
| | | | | | | | |

**प्रदर्श 11.5:** *देनदार खाते के प्रारूप*

निवल उधार विक्रय की गणना कुल उधार विक्रय में से विक्रय वापसी की राशि को घटाकर की जाती है। उदाहरण के लिये निम्न सूचनायें मोहन लाल टैडर्स की पुस्तकों से ली गई है:

| | रु. |
|---|---|
| 01 अप्रैल 2005 की देनदार | 50,000 |
| 31 मार्च 2006 को देनदार | 70,000 |
| देनदारों से प्राप्त धनधारी | 60,000 |
| प्रदत्त बट्टा | 1,000 |
| प्राप्य विपत्र | 30,000 |
| डूबत ऋण | 3,000 |

कुल देनदार खाता निम्न प्रकार बनाया जायेगा:

**मोहन लाल टेडर्स**

**कुल देनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2005<br>अप्रैल 01 | शेष आ/ला<br>उधार विक्रय<br>(शेष राशि) | | 50,000<br>1,14,000 | | रोकड़<br>बट्टा<br>प्राप्य विपत्र<br>अशोध्य ऋण<br>शेष आ/ले | | 60,000<br>1,000<br>30,000<br>3,000<br>70,000 |
| | | | 1,64,000 | | | | 1,64,000 |

© BSTBPC WEB COPY ,NOT TO BE PUBLISHED

### *11.4.3 प्राप्य विपत्र व देय विपत्र का निर्धारण*

कई बार प्राप्य विपत्र और देय विपत्रों से सम्बंधित विस्तृत विवरण उपलब्ध होते हैं। किन्तु वर्ष भर में प्राप्त एवं स्वीकृत विपत्रों के आकड़े अनुपलब्ध होते हैं, ऐसी स्थिति में कुल प्राप्त विपत्र खाता और देय विपत्र खाता तैयार करके शेष के रूप में अनुपलब्ध आकड़ों की गणना की जा सकती है कुल प्राप्य विपत्र खाता और कुल देय विपत्र खाते का प्रारूप चित्र संख्या 11.6 और 11.7 में दर्शाया गया है।

**कुल प्राप्य विपत्र खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तिथि | शेष आ/ला<br>विवध देनदार<br>(विपत्र प्राप्त) | | | | बैंक<br>विविध देनदार<br>(आनदृत विपत्र)<br>अंतिम शेष आ/ले | | |
| | | | | | | | |

**प्रदर्श 11.6:** *प्राप्य विपत्र खाते का प्रारूप*

**कुल देय विपत्र खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | बैंक (विपत्र परिपक्व)<br>विविध लेनदार<br>(आनदृत विपत्र)<br>शेष आ/ले | | | | शेष आ/ला<br>विवध लेनदार<br>(विपत्र स्वीकृत) | | |

**प्रदर्श 11.7:** *देय विपत्र का प्रारूप*

उदाहरण के लिए निम्नलिखित आंकड़े मै. एस. एस सेनापति की पुस्तकों से प्राप्त किये गये हैं:

| | *रुपये* |
|---|---|
| आरंभिक प्राप्य विपत्र | 5,000 |
| आरंभिक देय विपत्र | 37,000 |
| प्राप्य विपत्र अनादृत | 2,000 |
| देय विपत्र अनादृत | 66,750 |
| अंतिम देय विपत्र | 52,000 |
| वर्ष के दौरान संग्रहित विपत्र | 12,000 |
| अंतिम प्राप्य विपत्र | 4,000 |

© BSTBPC WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED

प्राप्य विपत्र खाता व देय विपत्र खाता इस प्रकार बनाया जायेगा:

**कुल प्राप्य विपत्र खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | शेष आ/ला | | 5,000 | | विविध देनदार | | 2,000 |
| | विविध देनदार | | 13,000 | | (विपत्र अनादृत) | | |
| | (विक्रय प्राप्त) | | | | बैंक विपत्र संग्रहित | | 12,000 |
| | (शेष राशि) | | | | शेष आ/ले | | 4,000 |
| | | | 18,000 | | | | 18,000 |

**कुल देय विपत्र खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | विपत्र अनादृत | | 66,750 | | शेष आ/ले | | 37,500 |
| | शेष आ/ले | | 52,500 | | विविध लेनदार | | 81,750 |
| | | | | | (विपत्र स्वीकृत) | | |
| | | | | | (शेष राशि) | | |
| | | | 1,19,250 | | | | 1,19,250 |

© PSTBPC WEB COPY. NOT TO BE PUBLISHED

**स्वयं जाँचिये - 1**

सही उत्तर पर निशान लगायें:

1. अपूर्ण अभिलेखन विधि पुस्त-पालन:
   (क) वैज्ञानिक है (ख) अवैज्ञानिक है
   (ग) अव्यवस्थित है (घ) दोनों (ख) और (ग) हैं
2. आरम्भिक पूँजी का निर्धारण खाता बना कर होता है:
   (क) कुल देनदार खाता (ख) कुल लेनदार खाता
   (ग) रोकड़ खाता (घ) आरंम्भिक अवस्था विवरण
3. वर्ष के दौरान उधार क्रय की गणना किस खाते को बना कर की जाती है:
   (क) कुल लेनदार खाता (ख) कुल देनदार खाता
   (ग) रोकड़ खाता (घ) आरंभिक अवस्था विवरण
4. यदि आरम्भिक पूँजी 60.000 रूपये, आहरण 5,000 रूपये, सत्र के अतिरिक्त पूँजी 10,000 रुपये, अंतिम पूँजी 90,000 रूपये है तो वर्ष के दौरान कमाया गया लाभ होगा:
   (क) 20,000 रुपये (ख) 25,000 रुपये
   (ग) 30,000 रुपये (घ) 40,000 रूपये

### *11.4.4 रोकड़ पुस्तक के सारांश द्वारा अनुपलब्ध सूचनाओं का निर्धारण*

कभी-कभी लेनदारों को भुगतान की गई राशि या देनदारों से प्राप्त राशि या रोकड़ का आरंम्भिक अथवा अंतिम शेष अथवा बैंक शेष अनुपलब्ध हो सकता है। प्राप्ति तथा भुगतान संबंधी अनुपलब्ध मदों का निर्धारण हम रोकड़ पुस्तक के संरांश जो कि वर्ष के दौरान सभी प्राप्ति एवं भुगतान की मदों की शेष राशि को दर्शाता है, कर सकते हैं।

यद्यपि लेनदारों को भुगतान और देनदारों से प्राप्त दोनों राशि अनुपलब्ध हैं तब ऐसी स्थिति में लेनदार अथवा देनदार खाता तैयार कर लुप्त राशियों का निर्धारण किया जा सकता है। जैसा की पहले बताया जा चुका है, अन्य अनुपलब्ध राशियों का निर्धारण रोकड़ पुस्तक सारांश के द्वारा किया जा सकता है।

अनुपलब्ध सूचना प्राप्त हो जाने के बाद अंतिम खातों को सीधे तैयार किया जा सकता है अथवा तलपट बनाने के पश्चात किया जा सकता है। तलपट के विभिन्न अवयवों और उनके सूचना स्रोतों का सारांश नीचे दिया गया है:

| | | |
|---|---|---|
| 1. | अंतिम परिसंपत्तियाँ (स्टाक के अतिरिक्त) और दायित्व | अंतिम सूची से |
| 2. | आरंभिक परिसंपत्तियाँ (जिसके आरम्भिक स्टॉक भी सम्मलित है) और दायित्व | आरंभिक सूची से |
| 3. | क्रय | कुल लेनदार खातों से उधार क्रय और रोकड़ पुस्तक सारांश से नकद क्रय और रोकड़ सारांश से नकद क्रय से |
| 4. | विक्रय | कुल देनदार खातों से उधार विक्रय और रोकड़ पुस्तक सारांश से नकद विक्रय से |
| 5. | आरम्भिक पूँजी | आरम्भिक अवस्था विवरण से |
| 6. | व्यय और आगम | रोकड़ सारांश के अनुसार सहायक सूचनाओं से |
| 7. | हानियाँ और अधिलाभ | समस्त खातों तथा विखरी सूचनाओं से |
| 8. | प्राप्त प्राप्य विपत्र | कुल प्राप्य विपत्र खातों से |
| 9. | स्वीकृत देय विपत्र | कुल देय विपत्र खातों से |
| 10. | रोकड़/बैंक शेष | रोकड़ पुस्तक सारांश से |

**प्रदर्श 11.8:** *अनुपलब्ध सूचनाओं को ज्ञात करना*

© BSTBPC WEB COPY .NOT TO BE PUBLISHED

*उदाहरण 3*

निम्न सूचनाओं द्वारा 31 मार्च 2005 को समाप्त होने वाले के लिये श्री अमित की कुल क्रय और कुल विक्रय की गणना करें:

| कुल | राशि (रु.) |
|---|---|
| 10 अप्रैल 2004 को कुल देनदार | 40,000 |
| 01 अप्रैल 2004 को लेनदार | 50,000 |
| 01 अप्रैल 2004 को प्राप्य विपत्र | 30,000 |
| 01 अप्रैल 2004 देय विपत्र | 45,000 |
| बट्टा प्राप्त | 5,000 |
| डूबत ऋण | 2,000 |
| विक्रय वापसी | 4,000 |
| बट्टा प्रदत्त | 3,000 |
| नकद विक्रय | 10,000 |
| नकद क्रय | 8,000 |
| 31 मार्च 2005 को कल देनदार | 80,000 |
| देनदारों से प्राप्त राशि | 25,000 |
| लेनदारों को नकद भुगतान | 80,000 |
| प्राप्य विपत्र का भुगतान | 40,000 |
| 31 मार्च 2005 को कुल लेनदार | 40,000 |
| 31 मार्च 2005 को देय विपत्र | 50,000 |
| 31 मार्च 2005 को प्राप्य विपत्र | 35,000 |

© BSTBPC WEB COPY .NOT TO BE PUBLISHED

***हल***

**कुल प्राप्य विपत्र खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | शेष आ/ला | | 30,000 | | रोकड़ | | 25,000 |
| | कुल देनदार | | 30,000 | | शेष आ/ले | | 35,000 |
| | (शेष राशि) | | | | | | |
| | | | 60,000 | | | | 60,000 |

**कुल देय विपत्र खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | रोकड़ | | 40,000 | | शेष आ/ला | | 45,000 |
| | शेष आ/ले | | 50,000 | | कुल लेनदार (शेष राशि) | | 45,000 |
| | | | 90,000 | | | | 90,000 |

**कुल देनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | शेष आ/ला | | 40,000 | | डूबत ऋण | | 2,000 |
| | विक्रय | | 1,79,000 | | विक्रय वापसी | | 4,000 |
| | (शेष राशि) | | | | प्रदत्त बट्टा | | 3,000 |
| | | | | | रोकड़ | | 1,00,000 |
| | | | | | प्राप्य विपत्र | | 30,000 |
| | | | | | शेष आ/ले | | 80,000 |
| | | | 2,19,000 | | | | 2,19,000 |

**कुल लेनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | प्राप्त बट्टा | | 5,000 | | शेष आ/ले | | 50,000 |
| | रोकड़ | | 80,000 | | (क्रय उधार) | | 1,20,000 |
| | देय विपत्र (खाते से हस्तांतरित) | | 45,000 | | (शेष राशि) | | |
| | शेष आ/ले | | 40,000 | | | | |
| | | | 1,70,000 | | | | 1,70,000 |

***टिप्पणी (कार्यवाही)***

*(1) उधार क्रय की गणना कुल लेनदार खाते से 1,20,000 रु. की गई है। नकद खरीद 8,000 रु. दी गई है। कुल खरीद 1,20,000 रु. + 8,000 रु. = 1,28,000 रु. होगी।*

*(2) उधार विक्रय की गणना कुल देनदार खाते से 1,79,000 रु. की गई है। नकद विक्रय 10,000 रु. दिया गया है। कुल विक्रय 1,79,000 रु. + 10,000 रु. = 1,89,000 रु.*

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

*उदाहरण 4*

सुधा से प्राप्त सूचनाओं के द्वारा शुद्ध विक्रय की गणना करें:

| | रुपये |
|---|---|
| 1 अप्रैल 2005 को देनदार | 65,000 |
| 31 मार्च 2006 को देनदार | 50,000 |
| 1 अप्रैल 2005 को प्राप्य विपत्र का आरंभिक शेष | 23,000 |
| 31 मार्च को प्राप्य विपत्र का आरंभिक शेष | 29,000 |
| विपत्र का अन्तिम शेष देनदारों से नकद प्राप्ती | 3,02,000 |
| प्रदत्त बट्टा | 8,000 |
| प्राप्य विपत्र से नकद प्राप्ती | 21,000 |
| डूबत चरण | 14,000 |
| प्राप्य विपत्र (अनादृत) | 20,000 |
| नकद विक्रय | 2,25,000 |
| विक्रय वापसी | 17,000 |

**सुधा की पुस्तकें**

**कुल प्राप्य विपत्र खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2005 अप्रैल 01 | आरंभिक शेष देनदार (प्राप्त विपत्र) (शेष राशि) | | 23,000<br>47,000<br>70,000 | | नकद (विपत्र भुगतान)<br>प्राप्य विपत्र (अनादृत)<br>अन्तिम शेष | | 21,000<br>20,000<br>29,000<br>70,000 |

**कुल देनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2005 अप्रैल 01 | आरंभिक शेष<br>प्राप्य विपत्र (अनादृत)<br>विक्रय<br>(शेष राशि) | | 65,000<br>20,000<br>3,53,000<br>4,38,000 | | नकद प्राप्ती<br>बट्टा प्रदत्त<br>विक्रय वापसी<br>डूबत ऋण<br>प्राप्य विपत्र (प्राप्य विपत्र खाते से हस्तांतरित)<br>अंतिम शेष | | 3,02,000<br>8,000<br>17,000<br>14,000<br>47,000<br>50,000<br>4,38,000 |

© RSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

*(कार्यवाही टिप्पणी)*

शुद्ध विक्रय की गणना कुल देनदार और प्राप्य विपत्र खातों से निम्न प्रकार करेंगे:

शुद्ध विक्रय = नकद विक्रय उधार विक्रय – विक्रय वापसी
= 2,25,000 रु. + 3,53,000 रु. – 17,000 रु.
= 5,61,000 रु.

*उदाहरण 5*

ओमप्रकाश की लेखा पुस्तकें द्वि-अंकन बही खाता प्रणाली पर आधारित तुलन-पत्र नहीं है। 31 मार्च, 2005 को उसके प्रलेखों से उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर लाभ-हानि खाता और तुलन-पत्र तैयार कीजिए। धुलाई उपकरण पर 10% की दर से ह्रास लगाएं।

**रोकड़ पुस्तक का सारांश**

**नाम** **जमा**

| *प्राप्तियां* | *राशि (रु.)* | *भुगतान* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|
| आरंभिक शेष आ/ला | 8,000 | नकद क्रय | 14,000 |
| नकद विक्रय | 40,000 | लेनदारों को भुगतान | 20,000 |
| देनदारों से प्राप्तियाँ | 30,000 | विविध व्यय | 6,000 |
| | | भाड़ा | 2,000 |
| | | आहरण | 8,000 |
| | | शेष आ/ले | 28,000 |
| | 78,000 | | 78,000 |

अन्य सूचनाएँ:

**31 मार्च, 2005**

| | *31 मार्च 2004* | *31 मार्च 2005* |
|---|---|---|
| देनदार | 9,000 | 12,000 |
| लेनदार | 14,400 | 6,800 |
| सामग्री का स्टॉक | 10,000 | 16,000 |
| धुलाई उपकरण | 40,000 | 40,000 |
| फर्नीचर | 3,000 | 3,000 |
| वर्ष के दौरान बट्टा दिया | - | 1,400 |
| वर्ष के दौरान प्राप्त बट्टा | | 1,700 |

© BSTBPC WEB COPY .NOT TO BE PUBLISHED

*हल*

**ओम प्रकाश की पुस्तकें**

**31 मार्च 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापारिक और लाभ व हानि खाता**

| *भुगतान* | *राशि (रु.)* | *प्राप्तियां* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|
| आरम्भिक स्टॉक | 10,000 | विक्रय | 74,400 |
| क्रय | 28,100 | अंतिम स्टॉक | 16,000 |
| भाड़ा | 2,000 | | |
| सकल आ/ले | 50,300 | | |
| | 90,400 | | 90,400 |
| विविध व्यय | 6,000 | सकल लाभ/ला | 50,300 |
| बट्टा दिया | 1,400 | प्राप्त बट्टा | 1,700 |
| ह्रास | 4,000 | निवल लाभ | 40,600 |
| | 52,000 | | 52,000 |

**31 मार्च 2005 को तुलन-पत्र**

| *दायित्व* | | *राशि रु.* | *परिसंपत्तियाँ* | | *राशि रु.* |
|---|---|---|---|---|---|
| पूँजी | 55,600 | | धुलाई उपकरण | 40,000 | |
| *जोड़ा:* निवल लाभ | 40,600 | | *घटाया:* ह्रास | (4,000) | 36,000 |
| *घटाया:* आहरण | 96,200 | | फर्नीचर | | 3,000 |
| | (8,000) | 88,200 | सामग्री का स्टॉक | | 16,000 |
| लेनदार | | 6,800 | देनदार | | 12,000 |
| | | | रोकड़ | | 28,000 |
| | | 95,000 | | | 95,000 |

*कार्यवाही टिपण्णी:*

**कुल देनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | आरंभिक शेष | | 9,000 | | नकद | | 30,000 |
| | विक्रय (उधार) | | 34,400 | | बट्टा दिया | | 1,400 |
| | | | | | शेष आ/ले | | 12,000 |
| | | | 43,400 | | | | 43,400 |

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

**कुल लेनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | रोकड़ | | 20,000 | | आरम्भिक शेष | | 14,400 |
| | प्राप्त बट्टा | | 1,700 | | क्रय (उधार) | | 14,100 |
| | शेष आ/ले | | 6,800 | | (शेष राशि) | | |
| | | | 28,500 | | | | 28,500 |

**31 मार्च 2004 को अवस्था विवरण**

| *विवरण* | *राशि रु.* | *विवरण* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|
| लेनदार | 14,400 | धुलाई उपकरण | 40,000 |
| पूंजी (शेष राशि) | 55,600 | फर्नीचर | 3,000 |
| | | सामग्री का स्टॉक | 10,000 |
| | | देनदार | 9,000 |
| | | नकद | 8,000 |
| | 70,000 | | 70,000 |

© BSTBPC ONLINE COPY .NOT TO BE PUBLISHED

*उदाहरण 6*

श्रीमति सुरभि ने 1 जनवरी 2005 को नकद 50,000 रुपये, फर्नीचर 1,000 रुपये माल 2,000 रुपये और मशीनरी 20,000 रुपये से व्यापार आरम्भ किया। वर्ष के दौरान उन्होंने अपने व्यापार में 20,000 रु. की नई पूँजी बैंक खाता खोलकर लगाई। उनकी पुस्तकों से प्राप्त सूचनाओं के आधार के आधार पर आय 31 दिसम्बर 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए अंतिम खाते तैयार कीजिए।

| | |
|---|---|
| देनदारों से प्राप्तियां | 57,500 |
| नकद विक्रय | 45,000 |
| नकद क्रय | 25,000 |
| मजदूरी का भुगतान | 5,000 |
| कर्मचारियों का वेतन | 17,500 |
| व्यापारिक व्यय | 6,500 |
| कारखाने का बिजली बिल | 7,500 |
| सुरभि द्वारा आहरण | 3,000 |
| लेनदारों को भुगतान | 42,000 |

| | |
|---|---|
| बट्टा दिया | 1,200 |
| प्राप्त बट्टा | 3,000 |
| डूबत ऋण अपलिखित | 1,300 |
| वर्ष के अन्त में नकद शेष | 20,000 |

श्रीमति सुरभि ने 2,500 रूपये मूल्य के माल का निजी प्रयोग किया जो कि पुस्तकों में दर्ज नहीं हुआ। फरनीचर पर 10% तथा मशीनरी पर 20% प्रतिवर्ष का ह्रास लगाया।

31 दिसंबर 2005 को देनदार 70,000 और लेनदार 35,000। इस तिथि को व्यापारिक स्टॉक 25,000 रुपये है।

***हल***

**श्रीमती सुरभि की पुस्तकें**

**31 दिसम्बर 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापारिक, और लाभ व हानि खाता**

| *व्यय/हानि* | | *राशि (रु.)* | *आगम/अधिलाभ* | | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|
| आरम्भिक स्टॉक | | 20,000 | विक्रय (नकद) | | 45,000 |
| क्रय–नकद | 25,000 | | उधार | 1,30,000 | 1,75,000 |
| उधार | 80,000[2] | | | | |
| | 1,05,000 | | अंतिम स्टाक | | 25,000 |
| *घटाया:* माल का निजी उपयोग | (2,500) | 1,02,500 | | | |
| मजदूरी | | 5,000 | | | |
| कारखाने का बिजली बिल | | 7,500 | | | |
| सकल लाभ आ/ले | | 65,000 | | | |
| | | 2,00,000 | | | 2,00,000 |
| वेतन | | 17,500 | सकल लाभ आ/ला | | 65,000 |
| व्यापारिक व्यय | | 6,500 | प्राप्त बट्टा | | 3,000 |
| बट्टा दिया | | 1,200 | | | |
| अशोध्य ऋण | | 1,300 | | | |
| ह्रास : | | | | | |
| फर्नीचर | 1,000 | | | | |
| मशीन | 4,000 | 5,000 | | | |
| निवल लाभ | | 36,500 | | | |
| पूंजी खाते में हस्तांतरित) | | | | | |
| | | 68,000 | | | 68,000 |

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

**31 दिसम्बर 2005 को श्रीमति सुरभि का तुलन-पत्र**

| *दायित्व* | | *राशि (रु.)* | *परिसम्पत्तियां* | | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|
| लेनदार | | 35,000 | रोकड़ | | 20,000 |
| पूंजी | 1,00,000 | | बैंक | | 13,000 |
| *जोड़ा:* निवल लाभ | 36,500 | | स्टॉक | | 25,000 |
| | 1,36,500 | | देनदार | | 70,000 |
| *जोड़ा:* अतिरिक्त पूँजी | 20,000 | | फर्नीचर | 10,000 | |
| | 1,56,500 | | *घटाया:* ह्रास | (1,000) | 9,000 |
| *घटाया* आहरण | | | मशीनरी | 20,000 | |
| रोकड़ 36,000 | | | *घटाया:* ह्रास | (4,000) | 16,000 |
| माल 2,500 | (38,500) | 1,18,000 | | | |
| | | 1,53,000 | | | 1,53,000 |

*कार्यकारी टिप्पणी:*

**(क) कुल देनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | शेष आ/ला | | - | | रोकड़ | | 57,500 |
| | विक्रय (उधार) | | 1,30,000 | | प्रदत्त बट्टा | | 1,200 |
| | (शेष राशि) | | | | डूबत ऋण | | 1,300 |
| | | | | | शेष आ/ले | | 70,000 |
| | | | 1,30,000 | | | | 1,30,000 |

**(ख) कुल लेनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | रोकड़ | | 42,000 | | शेष आ/ले | | - |
| | प्राप्त बट्टा | | 3,000 | | क्रय (उधार शेष राशि) | | 80,000 |
| | शेष आ/ले | | 35,000 | | | | |
| | | | 80,000 | | | | 80,000 |

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

**(ग) 01 जनवरी 2005 को अवस्था विवरण**

| *विवरण* | *राशि रु.* | *विवरण* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|
| पूंजी (शेष राशि) | 1,00,000 | रोकड़ | 50,000 |
| | | स्टॉक | 20,000 |
| | | फर्नीचर | 10,000 |
| | | मशीनरी | 20,000 |
| | 1,00,000 | | 1,00,000 |

**(घ) रोकड़ पुस्तक सारांश**

| *प्राप्तियां* | *राशि (रु.)* | *भुगतान* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|
| शेष आ/ला | 50,000 | क्रय | 25,000 |
| पूँजी (बैंक) | 20,000 | मजदूरी | 5,000 |
| देनदार | 57,000 | वेतन | 17,500 |
| विक्रय | 45,000 | व्यापारिक व्यय | 6,500 |
| | | बिजली बिल | 7,500 |
| | | आहरण | 36,000 |
| | | लेनदार | 42,000 |
| | | शेष आ/ले | 20,000 |
| | | अंतिम बैंक शेष (शेष राशि) | 13000 |
| | 1,72,500 | | 1,72,500 |

© BSTBPC WEB COPY .NOT TO BE PUBLISHED

**स्वयं जाँचिये - II**

स्वयं शब्द लिखें:

1. उधार विक्रय की गणना ..... खाते की शेष राशि से की जाती है।
2. ..... पर ..... की अधिक्यता किसी समयावधि पर होने वाली हानि से है।
3. ..... के लिए अंतिम पूँजी का समायोजन ..... को घटाकर व ..... को जोड़ पर किया जाता है।
4. अपूर्ण खातों का प्रयोग ..... द्वारा किया जाता है।

*उदाहरण 7*

1. श्री बहादुर के अपूर्ण लेखों से अंतिम खाते तैयार करें, साथ ही देनदारों पर 5% की दर से संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान बनायें और मोटर कार 20% की दर से ह्रास लगाएँ।

**(क) अप्रैल 2005 को तुलन-पत्र**

| *दायित्व* | *राशि (रु.)* | *परिसंपत्तियाँ* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|
| पूँजी | 92,500 | मोटर कार | 71,700 |
| देय विपत्र | 32,800 | स्टॉक | 51,500 |
| लेनदार | 84,200 | देनदार | 49,500 |
| प्राप्य विपत्र | 24,400 | | |
| हस्तस्थ रोकड़ | 12,400 | | |
| | 2,09,500 | | 2,09,500 |

**(ख) वर्ष के दौरान रोकड़ लेन-देन**

| *विवरण* | *राशि रु.* | *विवरण* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|
| शेष आ/ला | 12,400 | फर्नीचर | 30,000 |
| देनदारों से प्राप्ति | 1,15,000 | मजदूरी | 400 |
| देय विपत्र | 14,200 | क्रय | 40,500 |
| विक्रय | 1,03,000 | आहरण | 24,000 |
| देय विपत्र | 30,700 | सामान्य व्यय | 20,700 |
| | | लेनदारों को भुगतान | 80,800 |
| | | शेष आ/ले | 8,500 |
| | 2,44,600 | | 2,44,600 |

**(ग) अन्य सूचनाएं**

| | |
|---|---|
| प्राप्य विपत्र | 6,300 |
| ग्राहकों को बट्टा दिया | 2,300 |
| अपूर्तिकर्त्ता से बट्टा प्राप्त | 700 |
| उधार क्रय | 29,600 |
| अंतिम रहतिया | 41,700 |
| देनदारों का अन्तिम शेष | 55,000 |
| देय विपत्र का अंन्तिम शेष | 10,200 |

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

***हल***

नकद विक्रय और नकद क्रय लेन-देनों से उपलब्ध होंगे। उधार क्रय की राशि भी दी गई है। उधार विक्रय की राशि देनदार खाता खोल कर ज्ञात को जाएगी। यद्यपि उधार क्रय की राशि ज्ञात है किन्तु लेनदारों का अंतिम शेष नहीं दिया गया है। इसलिए लेनदार खाता भी खोला भी जाएगा। चूँकि देय-विपत्र और प्राप्य विपत्र भी दर्शाएं गए हैं। अत: इन खातों को तैयार किये जाने पर लेनदार और देनदार खाते पूर्ण नहीं होंगे।

**श्री बहादुर की पुस्तकें**

**31 मार्च 2006 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापारिक और लाभ व हानि खाता**

| *व्यय/हानि* | | *राशि (रु.)* | *आगम/अधिगम* | | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|
| अरंभिक स्टॉक | | 51,500 | विक्रय: | | |
| क्रय: नकद | 1,03,000 | | नकद | 40,500 | |
| उधार | 1,29,100 | 2,32,100 | उधार | 29,600 | 70,100 |
| | | | अंतिम स्टॉक | | 41,700 |
| मजदूरी | | 9,400 | | | |
| सकल लाभ आ/ला | | 1,42,800 | | | |
| | | 2,73,800 | | | 2,73,800 |
| समान्य व्यय | | 20,700 | सकल लाभ आ/ले | | 1,42,800 |
| बट्टा प्राप्त | | 2,300 | प्राप्त बट्टा | | 700 |
| मोटर कार पर ह्रास | | 14,340 | | | |
| संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान | | 2,750 | | | |
| निवल लाभ | | 10,3410 | | | |
| | | 143,500 | | | 1,43,500 |

**31 मार्च 2006 को तुलन-पत्र**

| *दायित्व* | | *राशि (रु.)* | *परिसंपत्तियां* | | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|
| पूँजी | 92,500 | | मोटर कार | 71,700 | |
| *जोड़ा:* निवल लाभ | 1,03,410 | | *घटाया:* ह्रास | (14,340) | 57,360 |
| | 1,95,910 | | फर्नीचर | | 30,000 |
| *घटाया:* आहरण | (24,000) | 1,71,910 | अंतिम स्टॉक | | 41,700 |
| लेनदार | | 24,200 | देनदार | 55,000 | |
| देय विपत्र | | 10,200 | *घटाया:* प्रावधान | (2,750) | 52,250 |
| | | | प्राप्य विपत्र | | 16,500 |
| | | | रोकड़ | | 8,500 |
| | | 2,06,310 | | | 2,06,310 |

*कार्यवाही टिप्पणी:*

**(क) कुल प्राप्य विपत्र खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | शेष आ/ला | | 24,400 | | नकद प्राप्ति | | 14,200 |
| | देनदार (विपत्र लेखे) | | 6,300 | | शेष आ/ले | | 16,500 |
| | | | 30,700 | | | | 30,700 |

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

**(ख) कुल देनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | शेष आ/ला | | 49,500 | | नकद (प्राप्ति) | | 1,15,000 |
| | उधार विक्रय | | 1,29,100 | | विपत्र लिखे | | 6,300 |
| | (शेष राशि) | | | | बट्टा दिया | | 2,300 |
| | | | | | शेष आ/ले | | 55,000 |
| | | | 1,78,600 | | | | 1,78,600 |

**(ग) कुल देय विपत्र खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | नकद (भुगतान) | | 30,700 | | शेष आ/ला | | 32,800 |
| | अंतिम शेष | | 10,200 | | लेनदार (विपत्र स्वीकार्य) | | 8,100 |
| | (शेष राशि) | | | | | | |
| | | | 40,900 | | | | 40,900 |

**(घ) कुल लेनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | नकद | | 80,800 | | शेष आ/ला | | 84,200 |
| | देय विपत्र | | 8,100 | | उधार क्रय | | 29,600 |
| | प्राप्त बट्टा | | 700 | | | | |
| | शेष आ/ले | | 24,200 | | | | |
| | (शेष राशि) | | | | | | |
| | | | 1,13,800 | | | | 1,13,800 |

*उदाहरण 8*

दिनेश अपने व्यापारिक खाते व्यवस्थित ढंग से नहीं रखता है। उसके द्वारा निम्न सूचनाएँ प्रदान की गई हैं–

© BSTBPT WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

### 1. परिसम्पत्तियाँ एवं देयतायें

| | 31 दिसंबर 2005 | 31 दिसंबर 2006 |
|---|---|---|
| विविध देनदार | 45,000 | 48,600 |
| विविध लेनदार | 24,000 | ? |
| रोकड़ | 4,500 | ? |
| फर्नीचर एवं फिक्सचर | 15,000 | ? |
| स्टॉक | 25,000 | ? |
| मोटर वेन | 16,000 | ? |

### 2. वर्ष के दौरान लेन-देन

| | |
|---|---|
| देनदारों से नकद प्राप्ति | 80,000 |
| देनदारों को दिया गया बट्टा | 1,400 |
| अशोध्य ऋण को अपलिखित किया | 1,800 |
| लेनदारों को नकद भुगतान | 63,000 |
| लेनदारों से प्राप्त बट्टा | 1,000 |
| विक्रय वापसी | 3,000 |
| क्रय वापसी | 2,000 |
| व्ययों का भुगतान | 6,000 |
| आहरण | 5,000 |
| किराये का भुगतान | 2,500 |

© BSTBPC FREE COPY NOT TO BE PUBLISHED

### 3. अन्य सूचनाएं

बकाया व्यय 1,200 रूपये, फर्नीचर पर 10% व मोटर कार पर 5% ह्रास लगायें। दिनेश ने बताया कि वह माल का विक्रय लागत पर जमा 40 प्रतिशत पर किया करता है। देनदारों पर 5% का प्रावधान किया गया।

दिसंबर 2006 को उसका व्यापारिक एवं लाभ-हानि खाता और तुलन-पत्र बनायें।

***हल***

**दिनेश की पुस्तकें**

**वर्षान्त 31 दिसंबर 2006 के लिये व्यापारिक और लाभ व हानि खाता**

**नाम** **जमा**

| *व्यय/हानि* | | *राशि रु.* | *आगम/अधिलाभ* | | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|
| आरंभिक स्टॉक | | 25,000 | विक्रय | 89,800 | |
| क्रय | 69,000 | | *घटाया:* विक्रय वापसी | 3,000 | 86,000 |
| *घटाया:* क्रय वापसी | (2,000) | 67,900 | अंतिम स्टॉक | | 30,000 |
| सकल लाभ आ/ले | | 24,800 | | | |
| | | 1,16,800 | | | 1,16,800 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देय बट्टा | | 1,400 | सकल लाभ आ/ला | | 24,800 |
| डूबत ऋण | | 1,800 | प्राप्त बट्टा | | 1,000 |
| व्ययों का भुगतान | 6,000 | | | | |
| *जोड़ा:* बकाया व्यय | 1,200 | 7,200 | | | |
| किराये का भुगतान | | 2,500 | | | |
| फर्नीचर पर ह्रास | 1,500 | | | | |
| मोटर वेन पर ह्रास | 800 | 2,300 | | | |
| संदिग्ध ऋणों के लिये प्रावधान | | 2,430 | | | |
| निवल लाभ (पूँजी खाते में हस्तांतरित) | | 8,170 | | | |
| | | 25,800 | | | 25,800 |

**31 दिसम्बर 2006 को तुलन-पत्र**

| *दायित्व* | | *राशि (रु.)* | *परिसंपत्तियाँ* | | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|---|---|
| बकाया व्यय | | 1,200 | रोकड़ | | 8,000 |
| लेनदार | | 27,000 | देनदार | 48,600 | |
| पूँजी | 81,500 | | *घटाया:* प्रावधान | (2,430) | 46,170 |
| *घटाया:* आहरण | 5,000 | | अंतिम स्टॉक | | 30,000 |
| | 76,500 | | फर्नीचर एवं फीक्सचर | 15,000 | |
| *जोड़ा:* निवल लाभ | 8,170 | 84,670 | *घटाया:* ह्रास | (1,500) | 13,500 |
| | | | मोटर वेन | 16,000 | |
| | | | *घटाया:* ह्रास | (800) | 15,200 |
| | | 1,12,870 | | | 1,12,870 |

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

*काम बही टिप्पणी:*

**(क) कुल देनदार खाता**

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | शेष आ/ला | | 45,000 | | रोकड़ प्राप्ति | | 80,000 |
| | विक्रय | | 89,800 | | बट्टा प्रदत्त | | 1,400 |
| | | | | | डूबत ऋण | | 1,800 |
| | | | | | विक्रय वापसी | | 3,000 |
| | | | | | अंतिम शेष | | 48,600 |
| | | | 1,34,800 | | | | 1,34,800 |

### (ख) कुल लेनदार खाता

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | नकद भुगतान | | 63,000 | | आरंभिक शेष | | 24,000 |
| | बट्टा प्राप्त | | 1,000 | | क्रय | | 69,000 |
| | क्रय वापसी | | 2,000 | | | | |
| | शेष आ/ले | | 27,000 | | | | |
| | | | 93,000 | | | | 93,000 |

### (ग) रोकड़ पुस्तक सारांश

**नाम** **जमा**

| *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* | *तिथि* | *विवरण* | *रो.पृ.सं.* | *राशि* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | शेष आ/ला | | 4,500 | | लेनदार | | 63,000 |
| | देनदार | | 80,000 | | व्यय का भुगतान | | 6,000 |
| | | | | | आहरण | | 5,000 |
| | | | | | किराये का भुगतान | | 2,500 |
| | | | | | अंतिम शेष | | 8,000 |
| | | | 84,500 | | | | 84,500 |

### (घ) 31 दिसंबर 2005 को अवस्था विवरण

| *दायित्व* | *राशि (रु.)* | *परिसंपत्तियां* | *राशि (रु.)* |
|---|---|---|---|
| लेनदार | 24,000 | देनदार | 45,000 |
| आरंभ में पूँजी | 81,500 | नकद | 4,500 |
| (शेष राशि) | | स्टॉक | 25,000 |
| | | फर्नीचर व फिक्सचर | 15,000 |
| | | मोटर वैन | 16,000 |
| | 1,05,500 | | 1,05,500 |

© PSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

**(ङ) अंतिम स्टॉक की गणना**

| | |
|---|---|
| कुल विक्रय | 89,800 |
| *घटाया:* विक्रय वापसी | (3,000) |
| निवल विक्रय | 86,800 |
| कुल क्रय | 69,000 |
| *घटाया:* क्रय वापसी | (2,000) |
| निवल क्रय | 67,000 |
| लागत पर निवल लाभ | 40% |
| माना विक्रय किये गये माल की लागत | 100 रु. |
| सकल लाभ | 40 रु. |
| बेचे गये माल की लागत | 140 रु. |

विक्रय = 86,800 रु. = 100 /140 x 86,800 रु. = 62,000 रु.

| | |
|---|---|
| निवल क्रय | 67,000 |
| *जोड़ा:* अंतिम रहतिया | 25,000 |
| विक्रय के लिये उपलब्ध माल की लागत | 92,000 |
| *घटाया:* विक्रय किये गये माल की लागत | (62,000) |
| अंतिम स्टॉक | 30,000 |

© BSTBPC WEB COPY. NOT TO BE PUBLISHED

### *अध्याय में प्रयुक्त शब्द*

- अपूर्ण प्रलेख
- अवस्था विवरण

### *अधिगम उद्देश्य के संदर्भ में सारांश*

1. *अपूर्ण प्रलेख:* द्विप्रविष्टि प्रणाली के अनुसार अपूर्ण प्रलेखों को तात्पर्य लेखांकन प्रलेखों के आभाव से होता है। प्रलेखों में अपूर्णता का स्तर उच्च स्तर यह असंगठित प्रलेखों से परिसम्पत्ति अभिलेख, जो कि स्वयं अपूर्ण है में अंतर पर निर्भर करता है।
2. *अवस्था विवरण व तुलन-पत्र में अंतर:* अवस्था विवरण वह विवरण है जिसमें एक फर्म की विभिन्न परिसंपत्तियों एवं दायित्वों को एक तिथि विशेष को दोनों पक्षों के अंतर जिसमें स्वामित्व का उल्लेख हो, का विस्तृत उल्लेख होता है। चूंकि प्रलेख अपूर्ण होते हैं। अत: परिसंपत्तियों एवं दायित्व सामान्यत: अनुमानित उपलब्ध सूचनाओं पर आधारित होते हैं। इन्हें समुचित रूप से बनाए गए खाता वहियों के शेषों से नहीं लिया जाता है। जैसा कि तुलन-पत्र के मामले में होता है। तुलन-पत्र को द्विअंकीय प्रणाली के आधार पर तैयार किये गए खातों से बनाया जाता है।
3. *अपूर्ण प्रलेखों से लाभ व हानि की गणना*: फर्में अवस्था विवरण का प्रयोग उस दशा में पूँजी की गणना करने के लिए किया जाता है जब फर्म द्वारा प्रलेख उच्च स्तर पर अव्यवस्थित रूप से रखे जाते हैं। प्रारंभिक एक अंतिम पूँजी के अंतर ये आहरण को जोड़कर तथा वर्ष के दौरान लग गई अतिरिक्त पूँजी को घटा दिया जाता है। इस प्रकार से अवधि में लाभ व हानि की गणना की जाती है।

4. *लाभ* व *हानि खाता और तुलन-पत्र बनाना:* जब ग्राहकों तथा लेनदारों के व्यक्तिगत खातों के बारे में सूचनाएं रोकड़ सारांश के साथ उपलब्ध है, और लाभ वं हानि खाता तथा तुलन-पत्र बनाने का प्रयास किया जा रहा है तो क्रय विक्रय देनदारों, लेनदारों के बारे में अनुपलब्ध सूचनायें देनदार खाता, लेनदार खाता प्राप्त विपत्र खाता, देय विपत्र खाता द्वारा द्विप्रविष्टि प्रणाली के तर्कों का प्रयोग करके उनके प्रारूप को बनाकर प्राप्त किया जा सकता है। एक बार जब लाभ एवं हानि खाता तथा तुलन-पत्र बना लिया जाता है। तो यह संभव होगा कि भविष्य में पूर्ण लेखांकन प्रणाली का प्रयोग करना प्रारंभ कर दे।

## अभ्यास के लिए प्रश्न

### *लघुउत्तरीय प्रश्न*

1. अपूर्ण खातों का अर्थ समझाइये।
2. अपूर्ण खाते रखने के कारणों का उल्लेख कीजिए।
3. अवस्था विवरण तथा तुलन-पत्र के अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. एक व्यापारी द्वारा अपूर्ण खाते प्रलेख रखने में आनेवाली व्यावहारिक कठिनाइयों का वर्णन कीजिए।

### *निबन्धात्मक प्रश्न*

1. अवस्था विवरण से क्या आशय है। अवस्था विवरण की सहायता से एक व्यापारी द्वारा अर्जित लाभ या हानि का निर्धारण किस प्रकार करेंगे।
2. क्या किसी व्यापारी द्वारा रखे गए अपूर्ण खातों से लाभ-हानि खाता व तुलन-पत्र बनाना संभव है। इससे सहमत है। व्याख्या कीजिए।
3. अपूर्ण खातों से निम्न का निर्धारण किस प्रकार करेंगे:
   - अ. आरम्भिक पूँजी व अंतिम पूंजी
   - ब. उधार विक्रय व उधार क्रय
   - स. लेनदारों को भुगतान व देनदारों से प्राप्तियाँ
   - द. रोकड़ का अंतिम शेष

### *संख्यात्मक प्रश्न*

अवस्था विवरण विधि द्वारा लाभ व हानि का निर्धारण

1. नीचे दी गई सूचनाओं से लाभ व हानि विवरण बनाइये।

| | रुपये |
|---|---|
| वर्ष के अन्त में पूँजी | 5,00,000 |
| वर्ष के आरंभ में पूँजी | 7,50,000 |
| सत्र के दौरान आहरण | 3,75,000 |
| अतिरिक्त पूँजी का समावेश | 50,000 |

(*उत्तर:* लाभ 75,000 रुपये)

© BSTBPC WEB COPY. NOT TO BE PUBLISHED

2. श्री मनवीर ने 01 जनवरी 2005 को 4,50,000 रुपये की पूँजी से व्यापार प्रारंभ किया। 31 दिसंबर 2005 को उनकी स्थिति निम्न है:

| रोकड़ | रुपये |
|---|---|
| प्राप्य विपत्र | 99,000 |
| संयंत्र | 75,000 |
| भूमि व भवन | 1,80,000 |
| फर्नीचर | 50,000 |

इस तिथि को मनवीर ने आपने मित्र से 45,000 रुपये उधार लिये। घरेलू व्यय के लिये 8,000 रुपये प्रति मास निकाले। 31 दिसंबर 2005 को समाप्त वर्ष के लिये लाभ व हानि की निर्धारण करें।

(*उत्तर:* लाभ 53,000 रुपये)

3. नीचे दी गई सूचनाओं के आधार पर वर्ष का लाभ निर्धारण करें:

| | |
|---|---|
| वर्ष के आरंभ में पूँजी | 70,000 |
| वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूँजी लगायी | 17,500 |
| स्टॉक | 59,500 |
| विविध देनदार | 25,900 |
| व्यपारिक परिसर | 8,600 |
| मशीनरी | 2,100 |
| विविध लेनदार | 33,400 |
| वर्ष के दौरान आहरण | 26,400 |

(*उत्तर:* लाभ 1,600 रूपये)

4. निम्न सूचनाओं से आरंभिक पूँजी की गणना करें।

| | |
|---|---|
| वर्ष के अंत में पूँजी | 4,00,000 |
| वर्ष के दौरान आहरण | 60,000 |
| वर्ष के दौरान नई पूँजी लगायी | 1,00,000 |
| चालू वर्ष का लाभ | 80,000 |

(*उत्तर:* वर्ष के आरंभ में पूँजी 2,60,000 रु. रुपये)

5. नीचे दी गई सूचनाओं के आधार पर अंतिम पूँजी अंतिम पूँजी की गणना करें:

| | 01 जनवरी 2005 | 31 दिसंबर 2006 |
|---|---|---|
| लेनदार | 5,000 | 30,000 |
| देय विपत्र | 10,000 | - |
| ऋण | – | 50,000 |
| प्राप्य विपत्र | 30,000 | 50,000 |
| स्टॉल | 5,000 | 30,000 |
| रोकड़ | 2,000 | 20,000 |

(*उत्तर:* अंतिम पूँजी 20,000 रु.)

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

6. श्रीमती अनु ने जुलाई 2005 को 4,00,000 रुपये की पूँजी से व्यापार आरंभ किया। आपने मित्र से 1,00,000 रु. का ऋण 10 प्रतिशत वार्षिक की दर से (ब्याज का भुगतान हुआ) व्यापार के लिये लिया और 75,000 रु. की अतिरिक्त पूँजी लगाई। 31 दिसंबर 2005 की स्थिति इस प्रकार है:

| | रुपये |
|---|---|
| रोकड़ | 3,00,000 |
| स्टॉक | 4,70,000 |
| देनदार | 3,50,000 |
| लेनदार | 3,00,000 |

वर्ष में हर मास 8,000 का आहरण किया वर्ष के लिये लाभ व हानि की गणना करें और कार्य वही को स्पष्ट दिखायें।

(*उत्तर:* लाभ 23,000 रुपये)

7. श्री अरनव ने अपने व्यवसाय के उचित प्रलेखे नहीं रखे। उपलब्ध निम्न सूचनाओं से वर्ष में लाभ व हानि का विवरण तैयार करें:

| | रुपये |
|---|---|
| वर्ष के आरम्भ में स्वामी की समता | 15,00,000 |
| प्राप्य विपत्र | 60,000 |
| हस्तस्थ रोकड़ | 80,000 |
| फर्नीचर | 9,00,000 |
| भवन | 10,00,000 |
| लेनदार | 6,00,000 |
| व्यापारिक स्टॉक | 20,00,00 |
| अतिरिक्त पूँजी लगाई | 3,20,000 |
| वर्ष के दौरान आहरण | 80,000 |

(*उत्तर:* हानि 1,00,000 रुपये)

वर्ष के आरम्भ व अन्त में अवस्था विवरण का निर्धारण एवं लाभ व हानि की गणना

8. श्री अकशत जो अपनी पुस्तकों को एकल प्रविष्टि प्रणाली के अनुसार रखता है, निम्न सूचनाऐं दी गई हैं:

| | 01 अप्रैल 2004 | 31 मार्च 2005 |
|---|---|---|
| हस्तस्थ रोकड़ | 1,000 | 1,500 |
| बैंक में रोकड़ | 15,000 | 10,000 |
| स्टॉक | 1,00,000 | 95,000 |
| देनदार | 42,500 | 70,000 |
| व्यापारिक परिसर | 75,000 | 1,35,000 |
| फर्नीचर | 9,000 | 7,500 |
| लेनदार | 66,000 | 87,000 |
| देय विपत्र | 44,000 | 58,000 |

© BSTBPC WEB COPY ,NOT TO BE PUBLISHED

वह वर्ष के दौरान 45,000 रूपये का आहरण किया एवं 25,000 रु. अतिरिक्त पूँजी लगाई। व्यापार के लाभ व हानि की गणना करें।

(उत्तर: लाभ 61,500 रुपये)

9. गोपाल नियमित रूप से लेखा पुस्तकों को नहीं रखता। निम्न सूचनाएं दी गई हैं:

| | 01 जनवरी 2005 | 31 दिसंबर 2005 |
|---|---|---|
| | रुपये | रुपये |
| हस्तस्थ रोकड़ | 18,000 | 12,000 |
| बैंक में रोकड़ | 1,500 | 2,000 |
| व्यापारिक स्टॉक | 80,000 | 90,000 |
| विविध लेनदार | 36,000 | 60,000 |
| विविध लेनदार | 60,000 | 40,000 |
| ऋण | 10,000 | 8,000 |
| कार्यालय उपकरण | 25,000 | 30,000 |
| भूमि व भवन | 30,000 | 20,000 |
| फर्नीचर | 10,000 | 10,000 |

वर्ष के दौरान 20,000 रुपये लाभ एवं 12,000 रुपये का व्यापार से आहरण किया। दी गई सूचनाओं के आधार पर लाभ व हानि का विवरण बनाइये।

(उत्तर: लाभ 53,500 रुपये)

10. श्री मुनीश अपूर्ण लेखों से अपनी लेखा पुस्तके रखते है उनकी पुस्तके निम्न सूचनाएं देती है:

| | 01 जनवरी 2005 | 31 दिसंबर 2005 |
|---|---|---|
| | रुपये | रुपये |
| रोकड़ | 1,200 | 1,600 |
| प्राप्य विपत्र | - | 2,400 |
| देनदार | 16,800 | 27,200 |
| स्टॉक | 22,400 | 24,400 |
| विनियोग | - | 8,000 |
| फर्नीचर | 7,500 | 8,000 |
| लेनदार | 14,000 | 15,200 |

वह अपने निजी व्यय के लिये 300 रुपये प्रति माह का आहरण करते हैं। वह अपने विनियोग 16,000 रुपये को 2 प्रतिशत अधिलाभ पर विक्रय करके राशि व्यापार में लगाते हैं।

(उत्तर: लाभ 9,780 रु.)

11. श्री गिरधारी लाल जी पूर्ण लेखांकन प्रणाली का पालन नहीं करते हैं 1 जनवरी 2000 को उनके शेष इस प्रकार हैं:

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

| *दायित्व* | *राशि (रुपये)* | *परिसम्पतियाँ* | *राशि (रुपये)* |
|---|---|---|---|
| विविध लेनदार | 35000 | हस्तस्थ रोकड़ | 5,000 |
| देय विपत्र | 15,000 | बैंक में रोकड़ | 20,000 |
| पूँजी | 40,000 | विविध देनदार | 18,000 |
| | | स्टॉक | 22,000 |
| | | फर्नीचर | 8,000 |
| | | संयन्त्र | 17,000 |
| | 90,000 | | 90,000 |

वर्ष के अन्त में उनकी स्थिति:

| | रुपये |
|---|---|
| हस्तस्थ रोकड़ | 7,000 |
| स्टॉक | 8,600 |
| देनदार | 23,800 |
| फर्नीचर | 15,000 |
| संयन्त्र | 20,350 |
| देय विपत्र | 20,200 |
| लेनदार | 15,000 |

वह 500 रुपये प्रति माह का आहरण करते हैं। इसमें से 1,500 रुपये व्यापार के लिये व्यय करते हैं। लाभ व हानि का विवरण बनाइये।

(*उत्तर:* लाभ 4,050 रुपये)

12. श्री अशोक अपनी पुस्तकें नियमित रूप से नहीं रखते हैं। उनकी पुस्तकों से निम्न सूचनाएँ उपलब्ध हैं:

| | 01 जनवरी 2005 रुपये | 31 दिसंबर 2005 रुपये |
|---|---|---|
| विविध लेनदार | 45,000 | 93,000 |
| पत्नी से ऋण | 66,000 | 57,000 |
| विविध देनदार | 22,500 | - |
| भूमि व भवन | 89,600 | 90,000 |
| हस्तस्थ रोकड़ | 7,500 | 8,700 |
| बैंक अधिविकर्ष | 25,000 | - |
| फर्नीचर | 1,300 | 1,300 |
| रहतिया | 34,000 | 25,000 |

वर्ष के दौरान श्री अशोक ने अपनी निजी कार 50,000 रुपये में विक्रय करके राशि व्यापार में विनियोग कर दी, 31 जुलाई 2005 तक व्यापार से 1,500 रुपये प्रति मास आहरण किया एवं उसके बाद 4,500 रुपये प्रति माह का आहरण किया। आप 31 दिसंबर 2005 को लाभ व हानि एवं विवरण तैयार करें।

(*उत्तर:* हानि 57,900 रुपये)

© BSTBPC WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED

13. कृष्णा कुलकर्णी अपनी पुस्तकें नियमित रूप से नहीं रखते हैं 31 दिसंबर 2005 को निम्न सूचनाओं के आधार पर लाभ व हानि का विवरण बनाइये:

| | 01 जनवरी 2005 (रुपये) | 31 दिसम्बर 2005 (रुपये) |
|---|---|---|
| हस्तस्थ रोकड़ | 10,000 | 36,000 |
| देनदार | 20,000 | 80,000 |
| लेनदार | 10.000 | 46.000 |
| प्राप्य विपत्र | 10,000 | 24,000 |
| देय विपत्र | 4,000 | 42,000 |
| कार | - | 80,000 |
| स्टॉक | 40,000 | 30,000 |
| फर्नीचर | 8,000 | 48,000 |
| विनियोग | 40,000 | 50,000 |
| बैंक शेष | 1,00,000 | 90,000 |

निम्न समायोजन करें:

(अ) कृष्णा ने निजी उपयोग के लिये 5,000 प्रति मास का आहरण किया।
(ब) कार पर 5% की दर और एक फर्नीचर पर 10% दर से ह्रास लगाये।
(स) बकाया किराया 6,000 रुपये।
(द) वर्ष के दौरान 30,000 रुपये नई पूँजी लगाई।

(*उत्तर:* लाभ 1,41,200 रुपये, अवस्था विवरण समायोजन के साथ 4,29,200 रुपये)

14. मैसर्स सानया स्पोंटस इक्युपमेंटस नियमित प्रलेख नहीं रखता। 31 दिसंबर 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये, निम्न सूचनओं के आधार पर लाभ व हानि एवं तुलन-पत्र तैयार करें:

| | 31 दिसंबर 2004 रुपये | 31 दिसंबर 2005 रुपये |
|---|---|---|
| हस्तस्थ रोकड़ | 6,000 | 24,000 |
| बैंक अधिविकर्ष | 30,000 | - |
| स्टॉक | 50,000 | 80,000 |
| विविध लेनदार | 26,000 | 40,000 |
| विविध देनदार | 60,000 | 1,40,000 |
| देय विपत्र | 6,000 | 12,000 |
| फर्नीचर | 40,000 | 60,000 |
| प्राप्य विपत्र | 8,000 | 28,000 |
| मशीनरी | 50,000 | 1,00,000 |
| विनियोग | 30,000 | 80,000 |

निजी उपयोग के लिये 10,000 रुपये प्रति माह का आहरण। वर्ष का दौरान 2,00,000 रु. की नई पूँजी का विनियोग। डूबत ऋण 2,000 रुपये एवं देनदार पर 5% का प्रावधान करें, अदत्त वेतन 2,400 रुपये, पूर्वदत्त बीमा 700 रुपये, फर्नीचर एवं मशीन पर 10% प्रति वर्ष की दर से ह्रास लगायें।

(*उत्तर:* लाभ 1,71,300 रुपये अवस्था विवरण समायोजन सहित 4,87,700 रुपये)

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

*लुप्त राशि का निर्धारण:*

15. निम्नलिखित सूचनाओं से लेनदार की राशि की गणना करें:

| | रुपये |
|---|---|
| 31 मार्च 2005 को विविध लेनदार | 1,80,425 |
| प्राप्त बट्टा | 26,000 |
| बट्टा दिया | 24,000 |
| क्रय वापसी | 37,200 |
| विक्रय वापसी | 32,200 |
| स्वीकृत विपत्र | 1,99,000 |
| विपत्र का लेनदारों को हस्तांतरण | 26,000 |
| 01 अप्रैल 2006 को लेनदार | 2,09,050 |
| कुल क्रय | 8,97,000 |
| नकद क्रय | 1,40,000 |

(*उत्तर:* लेनदारों को रोकड़ का भुगतान, 4,40,175 रुपये)

16. निम्न से उधार क्रय ज्ञात करें।

| | |
|---|---|
| नकद क्रय | 1,40,000 |
| 01 अप्रैल 2004 को लेनदारों का शेष | 45,000 |
| 31 मार्च 2005 को लेनदारों का शेष | 36,000 |
| लेनदारों को रोकड़ भुगतान | 1,80,000 |
| लेनदारों का चेक से भुगतान | 60,000 |
| रोकड़ क्रय | 75,000 |
| लेनदारों से प्राप्त बट्टा | 5,400 |
| बट्टा दिया | 5,000 |
| लेनदारों को देय विपत्र | 12,750 |
| क्रय वापसी | 7,500 |
| देय विपत्र (अनादृत) | 3,000 |
| प्राप्य विपत्र का लेनदारों को हस्तांतरण | 4,500 |
| लेनदारों को दिये गये प्राप्य विपत्र अनादृत | 1,800 |
| विक्रय वापसी | 3,700 |

(*उत्तर:* उधार क्रय 2,56,350 रुपये)

17. निम्न सूचनाओं से कुल क्रय की गणना करें:

| | रुपये |
|---|---|
| 01 जनवरी 2005 को लेनदार | 30,000 |
| 31 दिसंबर 2005 को लेनदार | 20,000 |
| देय विपत्र का आरंभिक शेष | 25,000 |
| देय विपत्र का अंतिम शेष | 35,000 |

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

| | |
|---|---|
| लेनदारों को रोकड़ भुगतान | 1,51,000 |
| विपत्र का भुगतान | 44,500 |
| नकद (रोकड़) क्रय | 1,29,000 |
| क्रय वापसी | 6,000 |

(*उत्तर:* कुल क्रय 3,30,500 रुपये)

18. निम्न सूचनाएं दी गई हैं:

| | रुपये |
|---|---|
| आरंभिक लेनदार | 60,000 |
| लेनदारों को रोकड़ भुगतान | 30,000 |
| अंतिम लेनदार | 36,000 |
| विक्रय वापसी | 13,000 |
| परिपक्व विपत्र | 27,000 |
| विपत्र अनादृत | 8,000 |
| क्रय वापसी | 12,000 |
| बट्टा दिया | 5,000 |

वर्ष के दौरान उधार क्रय की गणना करें।

(*उत्तर:* उधार क्रय 37,000 रुपये)

19. निम्न में से वर्ष के दौरान स्वीकृत विपत्र की राशि की गणना करें:-

| | |
|---|---|
| 01 अप्रैल 2005 को देय विपत्र | 1,80,000 |
| 31 मार्च 2006 को देय विपत्र | 2,20,000 |
| वर्ष के दौरान अनादृत देय विपत्र | 28,000 |
| वर्ष के दौरान परिपक्व देय विपत्र | 50,000 |

(*उत्तर:* विपत्र स्वीकृत 1,18,000 रुपये)

20. नीचे दी गई सूचनाओं से वर्ष के दौरान परिपक्व विपत्र की राशि ज्ञात करें:

| | |
|---|---|
| देय विपत्र अनादृत | 37,000 |
| देय विपत्र का अंतिम शेष | 85,000 |
| देय विपत्र का आरंभिक शेष | 70,000 |
| स्वीकृत देय विपत्र | 90,000 |
| चेक अनादृत | 23,000 |

(*उत्तर:* परिपक्व विपत्र 38,000 रुपये)

21. निम्न से देय खाते बनायें एवं अज्ञात संख्या को ज्ञात करें:

| | |
|---|---|
| स्वीकृत विपत्र | 1,05,000 |
| प्राप्त बट्टा | 17,000 |
| क्रय वापसी | 9,000 |
| विक्रय वापसी | 12,000 |

WEB COPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

| | |
|---|---|
| देय खातों को रोकड़ भुगतान | 50,000 |
| प्राप्य विपत्र का लेनदारों को हस्तांतरण | 45,000 |
| अनादृत विपत्र | 17,000 |
| डूबत ऋण | 14,000 |
| देय खातों का शेष (अंतिम) | 85,000 |
| उधार क्रय | 2,15,000 |

(*उत्तर:* लेनदारों को अरंभिक शेष 79,000 रुपये)

22. वर्ष के दौरान प्राप्त बिल की राशि की गणना करें:

| | |
|---|---|
| प्राप्य विपत्रों का आरंभिक शेष | 75,000 |
| अनादृत विपत्र | 25,000 |
| प्राप्त विल (परिपक्व) | 1,30,000 |
| प्राप्य विपत्रों का लेनदारों को हस्तांतरण | 15,000 |
| प्राप्य विपत्रों का अंतिम शेष | 65,000 |

(*उत्तर:* 1,60,000 रुपये)

23. निम्न सूचनाओं से अनादृत प्राप्य विपत्र की राशि को गणना करें:

| | |
|---|---|
| प्राप्य विपत्रों का आरंभिक शेष | 1,20,000 |
| प्राप्त विपत्रों (परिपक्व) | 1,85,000 |
| प्राप्य विपत्रों को हस्तांतरण | 22,800 |
| प्राप्य विपत्रों का अंतिम शेष | 50,700 |
| प्राप्त प्राप्य विपत्र | 1,50,000 |

(*उत्तर:* 11,500 रूपये)

24. नीचे दिये गये विवरण से उधार विक्रय व कुल विक्रय ज्ञात करें:

| | (रुपये) |
|---|---|
| आरंभिक देनदार | 45,000 |
| अंतिम देनदार | 56,000 |
| बट्टा दिया | 2,500 |
| विक्रय वापसी | 8,500 |
| अप्राप्य राशि | 4,000 |
| प्राप्त प्राप्य विपत्र | 12,000 |
| अनादृत प्राप्य विपत्र | 3,000 |
| अनादृत चैक | 7,700 |
| (नकद) रोकड़ विक्रय | 80,000 |
| देनदारों से प्राप्त रोकड़ | 2,30,000 |
| देनदारों से प्राप्त चैक | 25,000 |

(*उत्तर:* कुल विक्रय 3,62,300 रुपये)

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

25. निम्न सूचनाओं से 31 दिसंबर 2005 को समाप्त होने वाले में प्राप्य विपत्र खाता एवं कुल देनदार खाता बनायें:

| | रुपये |
|---|---|
| लेनदारों को आरंभिक शेष | 1,80,000 |
| प्राप्य विपत्र का आरंभिक शेष | 55,000 |
| वर्ष के दौरान रोकड़ विक्रय | 95,000 |
| वर्ष के दौरान उधार विक्रय | 14,50,000 |
| विक्रय वापसी | 78,000 |
| देनदारों से प्राप्त रोकड़ | 10,25,000 |
| देनदारों को बट्टा दिया | 55,000 |
| प्राप्य विपत्रों का लेनदारों को बेचान | 60,000 |
| प्राप्य रोकड़ (परिपक्व विपत्र) | 80,500 |
| अप्राप्य राशि | 10,000 |
| 31 दिसंबर 2005 को प्राप्य विपत्रों का अंतिम शेष | 75,500 |

(*उत्तर:* प्राप्त विपत्र 1,61,000, देनदारों का अंतिम शेष 3,01,000 रुपये)

26. संबंधित खाता बनाते हुये लुप्त राशि को ज्ञात करें।

| | |
|---|---|
| देनदारों का आरंभिक शेष | 14,00,000 |
| प्राप्य विपत्रों का आरंभिक शेष | 7,00,000 |
| प्राप्य विपत्रों का अंतिम शेष | 3,50,000 |
| चैक अनादृत | 27,000 |
| लेनदारों से प्राप्त रोकड़ | 10,75,000 |
| चैक प्राप्त करें एवं बैंक में जमा करें | 8,25,000 |
| बट्टा दिया | 37,500 |
| अप्राप्य राशि | 17,500 |
| विक्रय वापसी | 28,000 |
| ग्राहकों से प्राप्त प्राप्य विपत्र | 1,05,000 |
| परिपक्व प्राप्य विपत्र | 2,80,000 |
| छूट पर विपत्र | 65,000 |
| लेनदारों को विपत्र का हस्तातंरण | 70,000 |

(*उत्तर:* उधार विक्रय 5,16,000 रुपये)

27. निम्न सूचनाओं से विविध देनदारों का आरंभिक शेष एवं विविध लेनदारों के अंतिम शेष का निर्धारण करें।

| | |
|---|---|
| आरंभिक रहतिया | 30,000 |
| अंतिम रहतिया | 25,000 |
| आरंभिक लेनदार | 50,000 |
| अंतिम देनदार | 75,000 |
| लेनदारों से प्राप्त बट्टा | 1,500 |
| ग्राहकों को बट्टा दिया | 2,500 |

© BSTBPC WEB COPY .NOT TO BE PUBLISHED

| | |
|---|---|
| लेनदारों को रोकड़ भुगतान | 1,35,000 |
| वर्ष के दौरान स्वीकृत देय विपत्र | 30,000 |
| वर्ष के दौरान प्राप्त प्राप्य विपत्र | 75,000 |
| ग्राहकों से रोकड़ प्राप्ति | 2,20,000 |
| आनदृत प्राप्य विपत्र | 3,500 |
| क्रय | 2,95,000 |

विक्रय मूल्य पर सकल लाभ 25% एवं कुल विक्रय में से 85,000 रुपये नकद विक्रय है।

(*संकेत:* कुल विक्रय = 4,00,000 रु. = (3,00,000 रु. x 100/75)

(*उत्तर:* देनदारी का आरंभिक शेष 54,000 रूपये, लेनदारों का अंतिम शेष 1,78,500 रुपये)

28. श्रीमती भावना एकल प्रविष्टि प्रणाली से अपनी पुस्तकें रखती हैं। 31 दिसंबर 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये उनके व्यापार के अंतिम खाते तैयार करें। इस सत्र से रोकड़ प्राप्ति व रोकड़ भुगतान से सम्भावित प्रलेखे का विवरण निम्न है:-

**रोकड़ पुस्तक सारांश**

**नाम** **जमा**

| *प्राप्तियाँ* | *राशि* रु. | *भुगतान* | *राशि* रु. |
|---|---|---|---|
| रोकड़ का आरंभिक शेष | 12,000 | लेनदारों को भुगतान | 53,000 |
| अतिरिक्त पूँजी | 20,000 | व्यापारिक व्यय | 12,000 |
| देनदारों से प्राप्तियाँ | 1,20,000 | मजदूरी का भुगतान | 30,000 |
| | | आहरण | 15,000 |
| | | 31 दिसंबर 2005 को बैंक शेष | 35,000 |
| | | हस्तस्थ रोकड़ | 7,000 |
| | 1,52,000 | | 1,52,000 |

© RSTBPC WEB COPY . NOT TO BE PUBLISHED

अन्य सूचनाएँ

| | 01 जनवरी 2005 | 31 दिसंबर 2005 |
|---|---|---|
| देनदार | 55,000 | 85,000 |
| लेनदार | 22,000 | 29,000 |
| स्टॉक | 35,000 | 70,000 |
| सयंत्र | 10,00,000 | 1,00,000 |
| मशीनरी | 50,000 | 50,000 |
| भूमि व भवन | 2,50,000 | 2,50,000 |
| विनियोग | 20,000 | 20,000 |

समस्त विक्रय और क्रय उधार पर किये जाते हैं। सयंत्र और भवन पर ह्रास 10% से लगाएँ तथा मशीनरी पर ह्रास 5% से लगाएँ। संदिग्ध ऋणों पर प्रावधान 5% की दर से लगाएँ।

[उत्तर: सकल लाभ 95,000 रु.; निवल लाभ 41,250 रु.; तुलन-पत्र का कुल योग 5,70,250 रु.]

## स्वयं जाँचिये की जाँच सूची

### *1. स्वयं जाँचये - I*

1. (ख) 2. (घ)
3. (क) 4. (ख)

### *2. स्वयं जाँचये - II*

1. कुल देनदार 2, आरंभिक पूँजी, अंतिम पूँजी
3. अतिरिक्त पूँजी, आहरण 4. लघु व्यापारी

© BSTBPC WEB COPY ,NOT TO BE PUBLISHED